Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

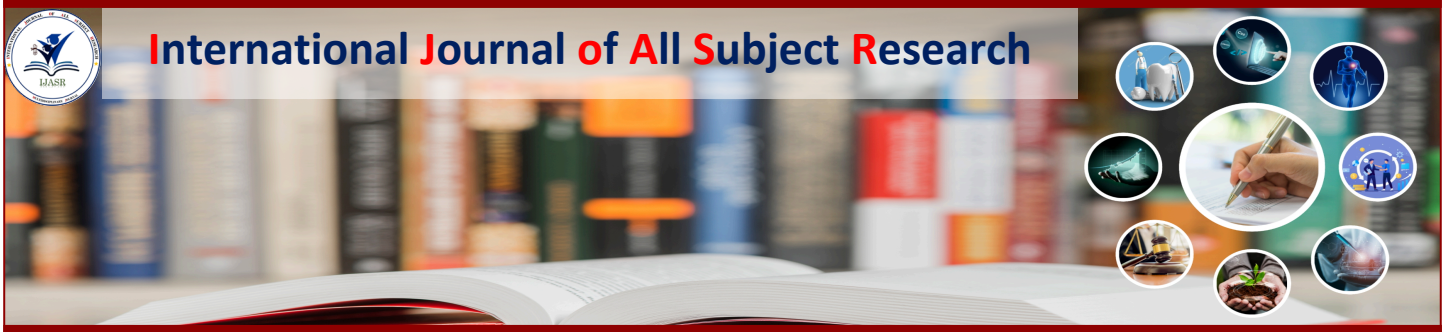

Received: 12/March/2026 **IJASR:** 2026; 5(3):05-08 **Accepted:** 19/April/2026

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और समकालीन शिक्षा

***[1]सत्य नरायन यादव**

*[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और समकालीन शिक्षा" के अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण करता है। वर्तमान वैश्विक शैक्षिक परिदृश्य में, जहाँ सूचना और तकनीक की प्रधानता है, मानवीय मूल्यों और समग्र विकास की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ऐसे मेंराष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020के तत्वावधान में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुत्थान एक ऐतिहासिक आवश्यकता बनकर उभरा है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में प्राचीन भारतीय प्रज्ञा की प्रासंगिकता को सिद्ध करना, पाठ्यक्रम संरचना में इसके एकीकरण के व्यवहारिक मॉडल प्रस्तुत करना और इसके सफल क्रियान्वयन की चुनौतियों व संभावनाओं का परीक्षण करना है।

शोध के प्रथम चरण में यह रेखांकित किया गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल धार्मिक या पारंपरिक विश्वासों का पुंज नहीं है, बल्कि यह'पंचकोश'और'अष्टांग योग'जैसे वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है, जो छात्र के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के बीच संतुलन स्थापित करते हैं। द्वितीय चरण में पाठ्यक्रम निर्माण की चर्चा की गई है, जिसमें गणित, विज्ञान, प्रबंधन और भाषा जैसे विषयों को उनके भारतीय मूल (जैसे- वैदिक गणित, आयुर्वेद, कौटिल्य का अर्थशास्त्र) के साथ जोड़कर एक 'भारतीय-केंद्रित' ढांचा तैयार करने का प्रस्ताव दिया गया है। यह दृष्टिकोण छात्रों में औपनिवेशिक मानसिकता को समाप्त कर मौलिक चिंतन और सांस्कृतिक गौरव को प्रोत्साहित करता है।

शोध का अंतिम खंड क्रियान्वयन की रणनीतियों पर केंद्रित है। इसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सफल क्रियान्वयन के लिएशिक्षक प्रशिक्षण (Capacity Building), डिजिटल संसाधनों का विकास और मूल्यांकन पद्धतियों में आमूल-चूल परिवर्तन अनिवार्य हैं। यह शोध पत्र इस तर्क को पुष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय ही भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित कर सकता है। अंततः, यह अध्ययन शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए एक दिशा-निर्देश प्रस्तुत करता है कि कैसे जड़ों से जुड़ी शिक्षा भविष्य की वैश्विक चुनौतियों का समाधान बन सकती है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), समग्र विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पाठ्यक्रम एकीकरण, विश्व गुरु, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

"सा विद्या या विमुक्तये" (विद्या वह है जो विमुक्त करे) — यह कालजयी भारतीय सूक्ति भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के मूल दर्शन को परिभाषित करती है। प्राचीन भारत में शिक्षा का अर्थ केवल सूचनाओं का संग्रह या जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं था, बल्कि यह मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग था। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने भौतिक प्रगति और तकनीकी नवाचारों के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों का क्षरण, मानसिक तनाव और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी गहरी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। आज की शिक्षा पद्धति मुख्य रूप से बाह्य जगत की जानकारी पर केंद्रित है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा 'अपर विद्या' (भौतिक ज्ञान) और 'पर विद्या' (आध्यात्मिक ज्ञान) के बीच एक आदर्श संतुलन स्थापित करती है।

ऐसे ऐतिहासिक और संक्रमणकालीन समय में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में पुनः स्थापित करके एक युगांतरकारी कदम उठाया है। यह केवल एक नीतिगत परिवर्तन नहीं है, बल्कि भारत के 'औपनिवेशिक मानस' से मुक्त होकर अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक जड़ों की ओर लौटने का एक राष्ट्रीय संकल्प है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य भारतीय ज्ञान प्रणाली की आधुनिक प्रासंगिकता को खोजना, उसे पाठ्यक्रम के ढांचे में एकीकृत करना और उसके धरातल पर सफल क्रियान्वयन की व्यावहारिक रणनीतियों का विश्लेषण करना है।

आधुनिक शिक्षा के लिए प्रासंगिकता: प्रथम खंड में यह विश्लेषण किया गया है कि प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण—जैसे पंचकोश विकास और समग्र कल्याण (Holistic Wellbeing)—आज के खंडित जीवन के लिए क्यों अनिवार्य है। यह सिद्ध करता है कि IKS केवल अतीत का गौरव गान नहीं, बल्कि वर्तमान की जटिल समस्याओं का वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक समाधान है।

पाठ्यक्रम डिजाइन और एकीकरण: द्वितीय खंड में उन व्यवहारिक विधियों पर चर्चा की गई है जिनके माध्यम से गणित, विज्ञान और प्रबंधन जैसे आधुनिक विषयों को भारतीय ज्ञान के साथ जोड़कर एक 'भारतीय केंद्रित' (India-centric) शिक्षा संरचना तैयार की जा सकती है।

सफल क्रियान्वयन: अंतिम खंड उन चुनौतियों और समाधानों को रेखांकित करता है जो इस ज्ञान को कागजों से निकालकर कक्षाओं तक पहुँचाने के लिए आवश्यक हैं, जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण और

***Corresponding Author:** सत्य नरायन यादव

तकनीक की भूमिका सर्वोपरि है।यह शोध पत्र इस बात की प्रबल वकालत करता है कि यदि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों (IKS) को आधुनिक पंखों (Contemporary Technology) के साथ जोड़ दें, तो भारत पुनः वैश्विक स्तर पर ज्ञान का नेतृत्व करने की क्षमता विकसित कर 'विश्व गुरु' के अपने गौरव को पुनर्प्राप्त कर सकता है।

उद्देश्य

i). आधुनिक शिक्षा के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता
ii). पाठ्यक्रम डिजाइन और निर्माण में IKS का एकीकरण
iii). शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का सफल क्रियान्वयन

1. आधुनिक शिक्षा के लिए IKS की प्रासंगिकता

समकालीन वैश्विक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से 'सूचना' (Information) और 'कौशल' (Skill) पर केंद्रित है, जबकि भारतीय ज्ञान प्रणाली 'बोध' (Understanding) और 'प्रज्ञा' (Wisdom) पर बल देती है। इसकी प्रासंगिकता के मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं:

(क) समग्र विकास: आधुनिक शिक्षा अक्सर केवल बौद्धिक विकास (Cognitive Development) तक सीमित रह जाती है। IKS 'पंचकोश'सिद्धांत के माध्यम से यह सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना नहीं, बल्कि शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलित विकास करना है।

(ख) वैयक्तिक और सामाजिक मूल्य: आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक संकट एक बड़ी चुनौती है। IKS में'पुरुषार्थ' (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की अवधारणा व्यक्ति को भौतिक सफलता के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी और आत्म-संतोष के बीच संतुलन बनाना सिखाती है। यह 'स्व' से 'सर्व' (Self to Society) की यात्रा है।

(ग) धारणीय जीवन शैली: जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट के दौर में भारतीय ज्ञान प्रणाली सबसे अधिक प्रासंगिक है।

- **प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व:** वेदों में पृथ्वी को 'माता' माना गया है। यह दृष्टिकोण उपभोगवादी संस्कृति के बजाय 'संयमित उपभोग' (Mindful Consumption) को बढ़ावा देता है, जो आज के 'Environmental Studies' का मुख्य आधार होना चाहिए।

(घ) अंतःविषय दृष्टिकोण (Interdisciplinary Approach): आधुनिक शोध अब 'Interdisciplinary' होने पर जोर दे रहे हैं, जो IKS की मूल विशेषता रही है। उदाहरण के लिए:

- **गणित और संगीत:** भारतीय संगीत के ताल और छंद शास्त्र में जटिल गणितीय संरचनाएं हैं।
- **योग और मनोविज्ञान:** योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) के लिए एक पूर्ण विज्ञान है, जो आज के तनावपूर्ण शैक्षिक परिवेश में छात्रों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2. तुलनात्मक विश्लेषण: पारंपरिक बनाम आधुनिक

आयाम	आधुनिक शिक्षा (Contemporary)	भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)
मुख्य केंद्र	आजीविका और करियर	जीवन निर्माण और चरित्र
सीखने की विधि	रटना और परीक्षा (Rote Learning)	अनुभव, चिंतन और मनन
प्रकृति का स्थान	संसाधन (Resource)	सजीव और पूजनीय (Living Entity)
शिक्षक की भूमिका	सुविधा प्रदाता (Facilitator)	मार्गदर्शक और आदर्श (Guru)

3. वैज्ञानिक प्रासंगिकता (Scientific Relevance)

IKS का अर्थ केवल अध्यात्म नहीं है। शोध पत्र में यह रेखांकित करना आवश्यक है कि:

- **आयुर्वेद:** यह 'निवारक स्वास्थ्य देखभाल' (Preventive Healthcare) पर जोर देता है, जो आधुनिक चिकित्सा की बढ़ती लागत का समाधान हो सकता है।
- **गणित:** 'वैदिक गणित' गणना की गति और सटीकता बढ़ाकर छात्रों में तर्कशक्ति विकसित करता है।
- **भाषा विज्ञान:** पाणिनी का अष्टाध्यायी व्याकरण आज 'प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण' (Natural Language Processing - NLP) और कोडिंग के लिए दुनिया का सबसे वैज्ञानिक ढांचा माना जाता है।

आधुनिकशिक्षा के लिए IKS की प्रासंगिकता इसलिए नहीं है कि यह 'पुराना' है, बल्कि इसलिए है क्योंकि यह'पूर्ण'है। यह छात्रों को केवल एक 'कुशल कर्मचारी' बनाने के बजाय एक 'जागरूक और जिम्मेदार वैश्विक नागरिक' बनाने की क्षमता रखता है।

4. पाठ्यक्रम डिजाइन में IKS का एकीकरण

पाठ्यक्रम निर्माण में IKS को समाहित करने के लिए एकत्रि-स्तरीय दृष्टिकोण (Three-tier Approach) अपनाया जा सकता है:

(क) विषय-विशिष्ट एकीकरण (Subject-Specific Integration)

हर विषय के आधुनिक सिद्धांतों को उसके भारतीय मूल या संदर्भ से जोड़ना:

- **गणित:** कैलकुलस और बीजगणित के साथ केरल स्कूल ऑफ मैथमैटिक्स और आर्यभट्ट के योगदान को पढ़ाना।
- **विज्ञान:** रसायन विज्ञान (Chemistry) पढ़ाते समय नागार्जुन के 'रसशास्त्र' और प्राचीन धातु विज्ञान (Metallurgy) का उदाहरण देना।
- **सामाजिक विज्ञान:** राजनीति विज्ञान में 'कौटिल्य के अर्थशास्त्र' और प्राचीन गणतांत्रिक व्यवस्थाओं (जैसे लिच्छवी) को वैश्विक संदर्भों के साथ पढ़ाना।

(ख) शिक्षण पद्धति का भारतीयकरण (Pedagogical Shifts)

पाठ्यक्रम केवल 'क्या पढ़ना है' (Content) तक सीमित न रहे, बल्कि 'कैसे पढ़ना है' (Methodology) पर भी ध्यान दे:

- **श्रवण, मनन, निदिध्यासन:** जानकारी सुनना, उस पर गंभीर चिंतन करना और फिर उसे व्यवहार में लाना।
- **वाद-संवाद:** चर्चा और तर्क-वितर्क आधारित शिक्षण, जो रटने के बजाय आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करता है।
- **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning):** प्रकृति के सानिध्य में और समाज के बीच जाकर सीखना, जैसा प्राचीन गुरुकुलों में होता था।

(ग) कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)

IKS को कौशल आधारित पाठ्यक्रमों से जोड़ना:

- स्थानीय हस्तशिल्प, कृषि पद्धतियां और पारंपरिक वास्तुकला को मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना।
- आयुर्वेद और योग को 'वेलनेस टूरिज्म' और 'हेल्थकेयर' के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के रूप में एकीकृत करना।

5. पाठ्यक्रम संरचना का प्रस्तावित मॉडल

पाठ्यक्रम निर्माण के समय'इंटीग्रेटेड फ्रेमवर्क'का पालन किया जाना चाहिए:

स्तर	एकीकरण का स्वरूप	उदाहरण
प्राथमिक (Foundation)	कहानियाँ और खेल	पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियों से मूल्य शिक्षा।
माध्यमिक (Middle)	परिचय और अनुप्रयोग	कृषि और विज्ञान में भारतीय पद्धतियों का परिचय।
उच्च (Higher)	शोध और तुलना	आधुनिक सिद्धांतों और प्राचीन ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन।

6. पाठ्यक्रम निर्माण में मुख्य चुनौतियां और समाधान

i). **प्रमाणिकता (Authenticity):** पाठ्यक्रम में शामिल की जाने वाली सामग्री वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित और ऐतिहासिक रूप से सटीक होनी चाहिए।

ii). **भाषा का सेतु (Language Bridge):** संस्कृत के पारिभाषिक शब्दों को सरल हिंदी/अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषाओं में समझाना ताकि वे बोझिल न लगें।

iii). **अनुकूलन (Adaptability):** IKS को इस तरह पेश करना कि वह वैश्विक मानकों (जैसे UNESCO के सतत विकास लक्ष्य) के साथ मेल खाए।

विशेष बिंदु: पाठ्यक्रम निर्माण में'चरित्र निर्माण'को एक अलग विषय मानने के बजाय उसे सभी विषयों के माध्यम से जीवन कौशल (Life Skills) के रूप में पिरोना चाहिए।

पाठ्यक्रम में IKS का एकीकरण इसे पिछड़ा नहीं बनाता, बल्कि इसे"जड़ों से जुड़ा और भविष्य के लिए तैयार" (Rooted in Culture, Future-Ready) बनाता है। यह छात्रों को अपनी पहचान पर गर्व करने और वैश्विक मंच पर मौलिक योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

7. शिक्षा में IKS का सफल क्रियान्वयन

(क) शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण (Teacher Training)

किसी भी शैक्षिक परिवर्तन की सफलता शिक्षक पर निर्भर करती है।

- **संवेदीकरण (Sensitization):** शिक्षकों को सबसे पहले IKS के वैज्ञानिक और तार्किक पक्ष से परिचित कराना ताकि वे इसे केवल 'परंपरा' नहीं बल्कि 'विज्ञान' के रूप में पढ़ा सकें।
- **अध्यापन विधियाँ:** शिक्षकों को 'अनुभवात्मक शिक्षण' (Experiential Learning) और 'कहानी सुनाने की कला' (Storytelling) जैसी भारतीय शिक्षण विधियों में प्रशिक्षित करना।

(ख) शिक्षण सामग्री और डिजिटल संसाधन (Content & Digital Resources)

- **बहुभाषी सामग्री:** प्राचीन ग्रंथों का सरल आधुनिक भाषाओं में अनुवाद और उनकी व्याख्या।
- **डिजिटल आर्काइव:** AI और VR (Virtual Reality) का उपयोग करके प्राचीन प्रयोगशालाओं, खगोलीय वेधशालाओं या ऐतिहासिक स्थलों का डिजिटल भ्रमण कराना।
- **ई-पाठशाला:** IKS पर आधारित ऑनलाइन कोर्सेज और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (OER) का निर्माण।

(ग) संस्थागत ढांचा और नीतियां (Institutional Framework)

- **IKS सेल की स्थापना:** प्रत्येक विश्वविद्यालय और प्रमुख स्कूल में एक 'IKS सेल' होना चाहिए जो पाठ्यक्रम में निरंतर सुधार और नवाचार पर नजर रखे।
- **क्रेडिट सिस्टम:** राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता ढांचा (NHEQF) के तहत IKS विषयों के लिए क्रेडिट अंक निर्धारित करना, ताकि छात्र इन्हें रुचि के साथ चुनें।

8. क्रियान्वयन का त्रि-आयामी मॉडल (Implementation Model)

सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए इसे तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

चरण	गतिविधि	अपेक्षित परिणाम
अल्पावधि (Short-term)	कार्यशालाएं, सेमिनार और पूरक पाठ्यक्रम (Bridge Courses)।	जागरूकता और स्वीकार्यता पैदा करना।
मध्यम अवधि (Mid-term)	मुख्य पाठ्यक्रम में अध्यायों का समावेश और शिक्षक प्रशिक्षण।	बुनियादी ज्ञान का सुदृढ़ीकरण।
दीर्घावधि (Long-term)	पूर्णतः एकीकृत बहु-विषयक शोध और वैश्विक शैक्षणिक मानक।	भारत का 'विश्व गुरु' के रूप में पुनरुत्थान।

9. सफल क्रियान्वयन के लिए रणनीतिक सुझाव (Strategic Suggestions)

i). **अनुसंधान को प्रोत्साहन:** केवल पुरानी बातों को दोहराना पर्याप्त नहीं है; आधुनिक विज्ञान के साथ उनका तुलनात्मक शोध (Comparative Research) आवश्यक है।

ii). **सामुदायिक भागीदारी:** स्थानीय विद्वानों, कारीगरों और विशेषज्ञों को शिक्षा प्रक्रिया से जोड़ना (जैसे स्थानीय कृषि विशेषज्ञ से मिट्टी के ज्ञान पर चर्चा)।

iii). **मूल्यांकन पद्धति में बदलाव:** परीक्षा प्रणाली केवल 'याददाश्त' का परीक्षण न करे, बल्कि यह देखे कि छात्र ने भारतीय मूल्यों और जीवन कौशलों को व्यवहार में कितना उतारा है।

IKS का सफल क्रियान्वयन "अतीत की ओर लौटने" (Going Back) के बारे में नहीं है, बल्कि यह"अतीत से भविष्य की ओर बढ़ने" (Going Forward with the Past) के बारे में है। जब हम अपनी जड़ों से जुड़कर आधुनिक तकनीक का उपयोग करेंगे, तभी भारतीय शिक्षा प्रणाली वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बना पाएगी।

विश्व गुरु: भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत

'विश्व गुरु'का अर्थ है 'विश्व का शिक्षक'। प्राचीन काल में भारत को यह संज्ञा उसकी सैन्य शक्ति के कारण नहीं, बल्कि उसके अगाध ज्ञान, आध्यात्मिक गहराई और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण मिली थी। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय उस समय वैश्विक ज्ञान के केंद्र थे, जहाँ विश्व भर से जिज्ञासु गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और दर्शन सीखने आते थे।

भारत की 'विश्व गुरु' के रूप में पहचान उसके'वसुधैव कुटुंबकम' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) और'सर्वे भवंतु सुखिनः' (सभी सुखी हों) जैसे उदार सिद्धांतों पर टिकी थी। शून्य का आविष्कार, योग का

विज्ञान और व्याकरण की शुद्धता—इन सभी ने वैश्विक सभ्यता की प्रगति में अमूल्य योगदान दिया। भारत ने कभी किसी देश पर अपनी विचारधारा थोपने के लिए आक्रमण नहीं किया, बल्कि अपने सांस्कृतिक और नैतिक प्रभाव से पूरी दुनिया को आलोकित किया।

आज के समकालीन संदर्भ में, जब विश्व मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट और नैतिक पतन जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, भारत कीभारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) पुन: प्रासंगिक हो उठी है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020के माध्यम से भारत अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है। आधुनिक तकनीक और प्राचीन प्रज्ञा (Wisdom) का समन्वय ही वह मार्ग है, जिससे भारत २१वीं सदी में पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में उभरकर मानवता को शांति, स्थिरता और समग्र विकास की नई दिशा दिखा सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की आधुनिक प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्विक शैक्षिक परिवेश में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की प्रासंगिकता मात्र एक पारंपरिक गौरव नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक आवश्यकता है। आज की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से सूचनाओं के संचय और व्यावसायिक दक्षता पर केंद्रित है, जिससे मानसिक तनाव, एकाकीपन और नैतिक मूल्यों में गिरावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसे में IKS का'समग्र दृष्टिकोण'इन संकटों का समाधान प्रस्तुत करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का'पंचकोश'सिद्धांत मनुष्य के केवल बौद्धिक ही नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देता है। आधुनिक मनोविज्ञान आज जिस 'मानसिक स्वास्थ्य' और 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता' (EQ) की बात कर रहा है, उसका आधार सदियों पहले योग और ध्यान के रूप में भारत में विकसित हो चुका था।

इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय संकट के इस दौर में भारतीय दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो प्रकृति को उपभोग की वस्तु न मानकर 'सजीव माता' मानती है। यहधारणीय जीवन शैली (Sustainable Lifestyle) का पाठ पढ़ाती है। साथ ही, आयुर्वेद की 'निवारक स्वास्थ्य पद्धति' और वैदिक गणित की 'तार्किक क्षमता' २१वीं सदी के कौशल विकास के लिए पूर्णतः अनुकूल हैं। अतः, IKS का एकीकरण छात्रों को अपनी जड़ों से जोड़कर उन्हें एक जागरूक, संतुलित और उत्तरदायी वैश्विक नागरिक बनाने में सक्षम है। यह आधुनिक विज्ञान को 'चेतना' के साथ जोड़कर मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और समकालीन शिक्षा का मिलन केवल एक वैकल्पिक प्रयास नहीं, बल्कि २१वीं सदी की अनिवार्य आवश्यकता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को केवल 'साक्षर' बनाना नहीं, बल्कि उसे 'सभ्य' और 'संवेदनशील' बनाना है। शोध के प्रथम उद्देश्य के आलोक में हमने देखा कि IKS की प्रासंगिकता आज के तनावपूर्ण युग में इसलिए बढ़ गई है क्योंकि यह 'समग्र स्वास्थ्य' (Holistic Health) और 'मानसिक संतुलन' का मार्ग प्रशस्त करती है। पंचकोश की अवधारणा और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का भारतीय दर्शन, आधुनिक शिक्षा की उन रिक्तियों को भरता है जिन्हें केवल भौतिकवादी दृष्टिकोण और तकनीक दूर नहीं कर सकी हैं।

द्वितीय उद्देश्य, यानी पाठ्यक्रम एकीकरण के संदर्भ में, यह निष्कर्ष निकलता है कि IKS को आधुनिक विषयों के विरुद्ध खड़ा करने के बजाय, उनके 'पूरक' के रूप में देखा जाना चाहिए। जब एक छात्र गणित के साथ 'वैदिक गणित' या भौतिकी के साथ 'वैशेषिक दर्शन' के परमाणुवाद को पढ़ता है, तो उसका बौद्धिक क्षितिज व्यापक होता है। पाठ्यक्रम का यह 'भारतीयकरण' छात्रों में हीनभावना को समाप्त कर अपनी पहचान के प्रति गौरव का भाव जागृत करता है, जो मौलिक शोध और नवाचार (Innovation) के लिए अनिवार्य है। यह एकीकरण शिक्षा को 'जड़ों से जुड़ा' और 'भविष्य के लिए तैयार' बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है।

अंतिम उद्देश्य, सफल क्रियान्वयन के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि नीतिगत दस्तावेज (NEP 2020) की सफलता अंततः धरातल पर किए गए कार्यों पर निर्भर करती है। सफल क्रियान्वयन के लिए केवल पाठ्यक्रमों का निर्माण पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक ऐसे शैक्षिक ईको-सिस्टम की आवश्यकता है जहाँ शिक्षक स्वयं भारतीय ज्ञान के प्रति संवेदी और प्रशिक्षित हों। डिजिटल तकनीक और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करके ही हम प्राचीन ज्ञान को समकालीन और स्वीकार्य बना सकते हैं।

अंततः, यह शोध पत्र इस विचार को पुष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुत्थान "अतीत की ओर लौटने" की कोई प्रतिगामी यात्रा नहीं है, बल्कि यह "अतीत के अनुभवों से भविष्य को संवारने" की एक प्रगतिशील प्रक्रिया है। जब हम अपनी प्राचीन प्रज्ञा (Wisdom) को आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़ते हैं, तभी हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल भारत को 'विश्व गुरु' के पद पर पुनः प्रतिष्ठित करेगी, बल्कि संपूर्ण मानवता के सतत विकास और शांति के लिए एक नया वैश्विक मार्गदर्शक सिद्धांत भी प्रस्तुत करेगी।

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री, वी. (2018). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति और आधुनिक चुनौतियाँ. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. अरोड़ा, जी. एल. (2005). शिक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा. NCERT।
3. AICTE - IKS Division. (n.d.). भारतीय ज्ञान प्रणाली के संवर्धन हेतु दिशा-निर्देश और शोध जर्नल. IKS Official Website.
4. कपिल कपूर एवं सिंह, ए. के. (2005). Indian knowledge systems (IKS): Volume I & II. DK Printworld.
5. कौटिल्य. (2010). अर्थशास्त्र (डॉ. आर.पी. कांगले, अनु.). मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स। (मूल कार्य प्राचीन काल में प्रकाशित)।
6. डॉ. के. कस्तूरीरंगन. (2020). भारतीय शिक्षा का भविष्य और प्राचीन विरासत: नेशनल एजुकेशन पॉलिसी रिपोर्ट. भारत सरकार।
7. NCERT. (2023). पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) - स्कूली शिक्षा के लिए. NCERT।
8. प्रसाद, पी. वी. (2021). आयुर्वेद और आधुनिक जीवन विज्ञान. सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज।
9. यूनिसेफ एवं यूनेस्को. (2021). सतत विकास और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की भूमिका. यूनेस्को रिपोर्ट।
10. राधाकृष्णन, एस. (1998). भारतीय दर्शन (Indian Philosophy). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020. भारत सरकार।
12. शर्मा, एम. पी. (2019). पंचकोश विकास: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन. भारतीय विद्या भवन।
13. सिंह, आर. के. (2022). वेदिक गणित और समकालीन तर्कशक्ति. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
14. स्वामी विवेकानंद. (2015). शिक्षा पर विचार. अद्वैत आश्रम।
15. तिवारी, एस. (2017). प्राचीन भारत में विज्ञान और तकनीकी विकास. राजकमल प्रकाशन ।